



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

## स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण: भारत में पशुपालन प्रथाएं

(\*डॉ. बृज वनिता<sup>1</sup>, डॉ. रजनी चौधरी<sup>2</sup>, डॉ. अंकज ठाकुर<sup>3</sup> एवं अंशुल ठाकुर<sup>4</sup>)

<sup>1</sup>वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र मंडी

<sup>2</sup>वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद उत्तर समशीतोष्ण क्षेत्रीय स्टेशन, गडसा

<sup>3</sup>सहायक प्रोफेसर, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

<sup>4</sup>स्वतंत्र शोधकर्ता, सुन्दर नगर, मंडी

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [brijvanitathakur@gmail.com](mailto:brijvanitathakur@gmail.com)

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविध स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों वाली भूमि है। पारंपरिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में, पशुपालन ग्रामीण आजीविका और कृषि पद्धतियों का एक अभिन्न अंग है। देश भर के स्वदेशी समुदायों ने पीढ़ियों से चले आ रहे पशुधन के पालन-पोषण और प्रबंधन के अनूठे और टिकाऊ तरीके विकसित किए हैं। ये पारंपरिक प्रथाएं न केवल ग्रामीण समुदायों की आर्थिक भलाई में योगदान करती हैं बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में मूल्यवान अंतर्दृष्टि भी रखती हैं। इस लेख में, हम पशुपालन में कुछ स्वदेशी ज्ञान प्रथाओं का पता लगाएंगे जो सदियों से भारत में प्रचलित हैं।

- पारंपरिक नस्लें और आनुवंशिक विविधता:** भारत में स्वदेशी समुदायों ने देशी पशुधन नस्लों के संरक्षण के महत्व को लंबे समय से मान्यता दी है, जिन्हें "देसी" नस्लों के रूप में जाना जाता है। गायों में गिर, कांकरेज और साहीवाल जैसी ये नस्लें, और बकरियों में छोटानागपुरी और चंगथांगी, स्थानीय जलवायु परिस्थितियों और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल होने के लिए सदियों से विकसित हुई हैं। आधुनिक वाणिज्यिक नस्लों की तुलना में, स्वदेशी नस्लें कठोर, रोग प्रतिरोधी और स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र के अनुकूल हैं। इन पारंपरिक नस्लों के संरक्षण और चुनिंदा प्रजनन से, स्वदेशी समुदाय आनुवंशिक विविधता के संरक्षण और लचीले पशुधन आबादी को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- चराई प्रथाएं और भूमि प्रबंधन:** पशुपालन में स्वदेशी ज्ञान का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू चरागाह भूमि का स्थायी प्रबंधन है। स्वदेशी समुदायों ने अपनी दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने के लिए जटिल प्रणाली विकसित की है। पारंपरिक ज्ञान घूर्णी चराई पर जोर देता है, जहाँ पशुओं को विभिन्न चरागाहों में ले जाया जाता है ताकि अतिवृष्टि को रोका जा सके और प्राकृतिक उत्थान की अनुमति मिल सके। इस तरह के अभ्यास मिट्टी के कटाव को कम करते हैं, जैव विविधता को बढ़ावा देते हैं, और घास के मैदानों के स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं, जिससे वे समग्र पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं।
- हर्बल उपचार और पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धतियां:** स्वदेशी समुदायों के पास हर्बल उपचार और पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धतियों के उपयोग के बारे में ज्ञान का खजाना है। उन्होंने स्थानीय पौधों और उनके औषधीय गुणों की गहरी समझ विकसित की है, जिनका उपयोग पशुधन में आम बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, नीम की पत्तियों को उनके एंटीसेप्टिक और कीट-

प्रतिरोधी गुणों के लिए जाना जाता है, जबकि हल्दी में रोगाणुरोधी और विरोधी भड़काऊ प्रभाव होते हैं। ये पारंपरिक उपचार न केवल लागत प्रभावी स्वास्थ्य विकल्प प्रदान करते हैं बल्कि सिंथेटिक दवाओं पर निर्भरता भी कम करते हैं और उनके उत्पादन से जुड़े पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हैं।

4. **पारंपरिक चारा प्रबंधन और अपशिष्ट उपयोग:** कुशल चारा प्रबंधन और अपशिष्ट उपयोग टिकाऊ पशुपालन के महत्वपूर्ण घटक हैं। स्वदेशी समुदायों ने अपने पशुधन की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध फ्रीड संसाधनों, जैसे फसल अवशेष, कृषि-औद्योगिक उपोत्पाद और यहां तक कि रसोई के कचरे का उपयोग करने की कला में महारत हासिल की है। वे पशु अपशिष्ट को जैविक खाद में परिवर्तित करने, लूप को बंद करने और पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने के लिए वर्मिकम्पोस्टिंग जैसी नवीन तकनीकों का भी उपयोग करते हैं। इष्टतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित करते हुए ये प्रथाएं पशुधन पालन के पर्यावरणीय पदचिह्न को कम करने में योगदान करती हैं।
5. **सांस्कृतिक और सामाजिक आयाम:** पशुपालन में स्वदेशी ज्ञान प्रथाओं का सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ गहरा संबंध है। धन, उर्वरता और समृद्धि के प्रतीक के रूप में पशुधन पारंपरिक समारोहों, त्योहारों और सामाजिक मेलजोल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मौखिक परंपराओं और पशुधन प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ज्ञान का अंतरपीढ़ी हस्तांतरण पहचान और सामुदायिक सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देता है। स्वदेशी पशुपालन प्रथाओं के संरक्षण और प्रचार के लिए इन सांस्कृतिक आयामों को पहचानना और सम्मान करना आवश्यक है।

भारत में पशुपालन में स्वदेशी ज्ञान प्रथाएं पारिस्थितिक ज्ञान, सतत संसाधन प्रबंधन और सांस्कृतिक विरासत के एक उल्लेखनीय मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे लचीली कृषि प्रणालियों के निर्माण, जैव विविधता के संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ इस स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित और एकीकृत करने से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हुए पशुधन पालन की लचीलापन और स्थिरता को बढ़ाया जा सकता है। यह अनिवार्य है कि नीति निर्माता, शोधकर्ता और समुदाय इन सदियों पुरानी प्रथाओं की रक्षा, प्रचार और सीखने के लिए मिलकर काम करें, पारंपरिक ज्ञान और पशुपालन में समकालीन प्रगति के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करें।